पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट
विश्वासनगर नई दिल्ली द्वारा आयोजित

48वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 18 मई 2014 से 4 जून 2014 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 18 मई से 4 जून 2014 तक देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित होने जा रहा है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर दिल्ली में पहली बार लग रहे इस प्रशिक्षण शिविर में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया ध्यान दें - दिल्ली महानगर में आवास की व्यवस्था करना प्रयत्नसाध्य एवं व्ययसाध्य कार्य है; अत: आयोजन समिति ने यह निर्णय किया है कि जिन शिविरार्थियों के आवास फार्म 15 अप्रैल तक समिति के पास आ जावेंगे, समिति उनकी समुचित व्यवस्था कर सकेगी। **15 अप्रैल के बाद प्राप्त होने वाले आवास फार्मों पर विचार करना संभव नहीं होगा;** अत: प्रशिक्षण शिविर में आने वाले प्रशिक्षणार्थियों/शिविरार्थियों से निवेदन है कि वे अपने आवास फार्म 15 अप्रैल के पहले दिल्ली/जयपुर भिजवाने का कष्ट करें।

आवास फार्म www.kundkundtrust.com/kundkundtrust.org पर उपलब्ध है। आप ई-मेल, डाक द्वारा या निम्न पतों पर संपर्क करके भी मंगा सकते हैं। ये फार्म आप वेबसाइट पर ऑनलाइन भी भर सकते हैं।

हार्दिक अनुरोध :- श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र - (1) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन-0141-2705581, 2707458 Fax : 0141-2704127
Email-ptstjaipur@yahoo.com website : www.ptst.in
(2) श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट, 2/76, भीम गली, विश्वास नगर, दिल्ली-32 फोन-9810094987, 9312558753, 9582883020, 9350222646 (मंगलसेन जैन), 9212199105
Email-kundkundtrust@gmail.com; website : www.kundkundtrust.com.org

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 32 (वीर नि. संवत् - 2540) 368 अंक : 8

चिदानन्द भूलि रह्यो ...

चिदानन्द भूलि रह्यो सुधि सारी, तू तो करत फिरै म्हारी म्हारी।।टेक।।
मोह उदय तैं सबही तिहारी, जनक मात सुत नारी।
मोह दूरि कर नेत्र उघारो, इन में कोई न तिहारी।।
चिदानन्द भूलि रह्यो।।1।।
झाग समान जीवना जोवन, पर्वत नाला कारी।
धनपति रंक समान सबन को, जात न लागे वारी।।
चिदानन्द भूलि रह्यो।।2।।
जुवा मांस मधु अरु वेश्या, हिंसा चौरी जारी।
सप्त व्यसन में रत्त होय के, निजकुल कीन्हो कारी।।
चिदानन्द भूलि रह्यो।।3।।
पुन्य पाप दोउ लार चलत हैं, यह निश्चय उरधारी।
धर्म द्रव्य तोय स्वर्ग पठावै, पाप नरक में डारी।।
चिदानन्द भूलि रह्यो।।4।।
आतम रूप निहार भजो जिन, धर्म मुक्ति सुखकारी।
'बुधमहाचंद' जानि यह निश्चय, जिनवर नाम सम्हारी।।
चिदानन्द भूलि रह्यो।।5।।

- कविवर पण्डित बुधमहाचंदजी

छहढाला प्रवचन

सम्यक्त्व धारक जीव की अंतरंग दशा, उसकी महिमा एवं दुर्गतिगमन का अभाव

दोषरहित गुणसहित सुधी जे, सम्यग्दरश सजै हैं।
चरितमोहवश लेश न संजम पै सुरनाथ जजै हैं।।
गेही, पै गृह में न रचैं ज्यों, जलतैं भिन्न कमल है।
नगरनारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल है।।१५।।
प्रथम नरक बिन षट् भू ज्योतिष वान भवन षंड नारी;
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी।
तीनलोक तिहुँकाल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी;
सकल धर्म को मूल यही, इस बिन करनी दुखकारी।।१६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

भरत चक्रवर्ती या छोटा मेंढ़क, जो भी सम्यग्दृष्टि हैं, उन सभी ने आकाश जैसा अलिप्त अपना स्वभाव देखा है, अत: परभाव के प्रेम से वे लिप्त नहीं होते; उन्हें असंयम से जो रागादि है, उसको भी वे छोड़ना चाहते हैं, उसको पुष्ट करना नहीं चाहते। उन सब परभावों को अपने चैतन्यस्वभाव की अनुभूति से भिन्न जानकर अभिप्राय में उनको छोड़ दिया है कि ये कोई भाव मैं नहीं हूँ। स्वानुभूति के द्वारा स्व-पर का विवेक हुआ है; अत: स्वतत्त्व में ही प्रीति है, पर की प्रीति छूट गई है।

विषय-कषाय तो पाप है, धर्मी भी उसे पाप ही समझता है; किन्तु उसी समय धर्मी के अंतर में स्थित सम्यग्दर्शन शुद्ध है, प्रशंसनीय है, मोक्ष का कारण है। उस सम्यग्दर्शन का भाव विषय-कषायों से अलिप्त है। भिन्न-भिन्न तरह की दो धारायें एक साथ चल रही हैं, एक सम्यक्त्वादि शुद्ध भाव की धारा और दूसरी रागधारा; उनमें से शुद्धभाव की धारा के साथ धर्मी की तन्मयता है और उसी के द्वारा धर्मी की सच्ची पहचान होती है। अज्ञानी अकेली रागधारा को देखता है, अत: वह धर्मी को

नहीं पहचान सकता।

अहा, देखो वीतरागी जैनमार्ग की पहली सीढ़ी सम्यग्दर्शन कैसी अलौकिक है ! जैनमार्ग को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी सम्यग्दर्शन या सच्चा आत्मज्ञान नहीं होता; अत: सच्चा चारित्र भी नहीं होता। ऐसे अन्य मार्ग की मान्यता में तो गृहीत मिथ्यात्व है; धर्मी को ऐसे कुमार्ग का आदर नहीं होता। उसने तो चैतन्य के अनन्तगुण के रस से भरपूर अतीन्द्रिय आनन्द के अनुभवसहित आत्मा की प्रतीति की है, उसके साथ में नि:शंकितादि आठ गुण होते हैं। उसे तीव्र कषाय के कोई कार्य नहीं होते। मांस-अण्डे-शराब आदि अभक्ष्य वस्तु का सेवन कभी नहीं होता; महापाप के कारण सप्त व्यसन भी नहीं होते।

अरे, ऐसे पापकार्य तो जिज्ञासु-सज्जन को भी नहीं होते, तब फिर सम्यग्दृष्टि को तो कैसे हो ? चौथे गुणस्थान में सम्यग्दृष्टि की यद्यपि संयमदशा नहीं होती, तथापि उसे अलौकिक ज्ञान वैराग्यदशा होती है, स्वरूप में आचरणरूप स्वरूपाचरण दशा भी है और मिथ्यात्व या अनन्तानुबंधी क्रोधादि तो उसे होते ही नहीं। उस धर्मी के ज्ञान में अतीन्द्रिय आनन्द आया है, इसलिए अन्यत्र कहीं उसे संतोष या सुख का आभास नहीं होता; विषयों में गृद्धता नहीं है, किन्तु खेद है; असंयम है, किन्तु स्वच्छंदता नहीं है। अरे ! आत्मा के आनन्द का साधक तो संसार से उदास हुआ, उसे अब स्वच्छन्दता कहाँ ?

पर्याय में प्रतिक्षण उसका ज्ञान राग से भिन्न रहकर मोक्ष को साध रहा है और उसमें ही सच्चा वैराग्य है। जहाँ राग का कर्तृत्व ही छूट गया, वहाँ उसका (राग का) जोर नहीं रहता, अत: असंयमदशा रहते हुए भी कषायें मर्यादा में आ गयी है (कषायों की मर्यादा हो गयी हैं) वहाँ श्रद्धा-ज्ञान में मलिनता नहीं रहती - ऐसा सम्यग्दर्शन जिस जीव ने प्रगट किया है, वह इन्द्र द्वारा भी प्रशंसनीय है। अहो, ऐसे कठिन काल में भी अन्तर की अनुभूति से जिसने आत्मदर्शन कर लिया, वह धन्य है, वह तो आत्मराजा के आनन्द दरबार में जाकर बैठ गया, वह पंचपरमेष्ठी की जाति में आ गया; शास्त्रों ने जिस चैतन्यवस्तु की अनन्त महिमा गायी है, वह चैतन्यवस्तु उसने अपने में पा ली, अपने में उसका अनुभव कर लिया; वह सुकृती है, जगत में सर्वश्रेष्ठ कार्य उसने कर लिया, अत: वह धन्य है...धन्य है...धन्य है...।

अहो, जीव को सम्यग्दर्शन के समान सुखकारी तीन काल, तीन लोक में दूसरा कोई नहीं है। सम्यग्दर्शन ही श्रावक या मुनि के समस्त धर्म का मूल है। सम्यग्दर्शन

से रहित शुभाशुभ समस्त क्रियाएँ जीव को दुखकारी हैं।

सम्यग्दर्शन-धारक जीव प्रथम नरक को छोड़कर छह नरकों में, भवनवासी-व्यन्तर-ज्योतिष देवों में, नपुंसक में, स्त्रीपर्याय में, स्थावर में, विकलत्रय में या कर्मभूमि के पशु में कभी उत्पन्न नहीं होता। सम्यग्दृष्टि मनुष्य उत्तम देव में ही उत्पन्न होता है; यदि किसी को सम्यग्दर्शन के पहले अज्ञानदशा में नरकादि आयु बँध गई हो तो ऐसा जीव प्रथम नरक में या भोगभूमि के तिर्यंच अथवा मनुष्य में जायेगा। सम्यग्दर्शन की भूमिका में तो नरक-तिर्यंच की आयु बँधती ही नहीं। सम्यग्दृष्टि मनुष्य मरकर विदेह क्षेत्रादि कर्मभूमि में उत्पन्न नहीं होता, मिथ्यादृष्टि मनुष्य ही मरकर वहाँ उत्पन्न हो सकता है।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तो चारों गति के योग्य जीवों को हो सकती है - देव या मनुष्य, तिर्यंच या नारक कोई भी पात्र जीव सम्यग्दर्शन पा सकता है। नरक में भी असंख्यात सम्यग्दृष्टि जीव हैं। सम्यग्दृष्टि जीव यदि चरमशरीरी न हो तो मरकर कहाँ उपजेगा ? और कहाँ नहीं उपजेगा ? वह यहाँ दिखाया है -

देवलोक से चयकर सम्यग्दृष्टि जीव उत्तम मनुष्य में ही आता है, अन्यत्र नहीं जाता। नरक से निकलकर सम्यग्दृष्टि जीव उत्तम मनुष्य में ही आता है, अन्यत्र नहीं जाता। तिर्यंच में से मरकर सम्यग्दृष्टि जीव वैमानिक स्वर्ग में ही जाता है, अन्यत्र नहीं।

अब सम्यग्दृष्टि मनुष्य में दो बाते हैं -

(१) सामान्यरूप से तो सम्यग्दृष्टि मनुष्य मरकर स्वर्ग में ही जाते हैं।

(२) परन्तु जिसे सम्यग्दर्शन के पहले मिथ्यात्वदशा में आयु बँध गई हो और बाद में सम्यक्त्व हुआ हो - ऐसा जीव सम्यक्त्व सहित मरकर, यदि उसे नरक का आयुष्य बंधा होगा तो वह पहले नरक में जायेगा और यदि तिर्यंच का या मनुष्य का आयुष्य बंधा होगा तो वह भोगभूमि का तिर्यंच या मनुष्य होगा। इसमें भी यह विशेषता है कि ऐसा जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टि ही होगा। अन्य सम्यक्त्व साथ में लेकर कोई जीव नरक में या भोगभूमि में उत्पन्न नहीं होता - यह नियम है। **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन -

परद्रव्य हेय एवं स्वद्रव्य उपादेय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 50वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है -

पुव्वुत्तसयलभावा परदव्वं परसहावमिदि हेयं।
सगदव्वमुवादेयं अंतरतच्चं हवे अप्पा।।५०।।

(हरिगीत)

हैं हेय ये परभाव सब ही क्योंकि ये परद्रव्य हैं।
आदेय अन्तस्तत्त्व आतम क्योंकि वह स्वद्रव्य है।।५०।।

पूर्वोक्त सभी भाव परस्वभाव हैं, परद्रव्य हैं; इसलिये हेय हैं तथा अन्तःतत्त्वरूप आत्मा स्वद्रव्य हैं; अतः उपादेय है।

(गतांक से आगे ...)

यहाँ हेय-उपादेय अथवा त्याग-ग्रहण के स्वरूप का कथन है।

पहले ४९वीं गाथा में विभाव गुण-पर्यायों को व्यवहारनय से उपादेयरूप कहा गया था; परन्तु शुद्धनिश्चयनय से वे सब हेय हैं; क्योंकि वे परस्वभावी होने के कारण परद्रव्य हैं।

उदयभाव एक समय का विकारीभाव है, उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभाव एक समय की निर्मल पर्यायें हैं। इन चारों भावों का ज्ञान करने की अपेक्षा से उन्हें व्यवहार से उपादेय कहा था; परन्तु त्रिकालीस्वभाव की दृष्टि से देखा जावे तो चारों भावों की ओर का लक्ष्य छोड़ने योग्य है; क्योंकि उदयभाव विकार है, उस विकार से धर्म नहीं होता। उपशमभाव, क्षयोपशमभाव और क्षायिकभाव निर्मल पर्याय होने पर भी, पर्याय के लक्ष्य से राग होता है - धर्म नहीं होता और क्षायिक भाव वर्तमान में प्रकट नहीं है; जो प्रकट नहीं है, उसका विचार करने पर राग होता है; अतः उसका विकल्प भी छोड़ने योग्य है। इस अपेक्षा से उन चारों भावों को परद्रव्य कहा है। केवली भगवान को कुछ समझना शेष नहीं है, उनके नय नहीं हैं। जिसको समझना

शेष है - ऐसे साधक को नय होते हैं, उसे पर्याय के ऊपर लक्ष्य करने से राग होता है, इसलिए उन चारों भावों के ऊपर से लक्ष्य छुड़ाया है।

समयसार गाथा ११ में कहा है कि व्यवहारनय अभूतार्थ है और भूतार्थ-शुद्धनय का आश्रय करनेवाला सम्यग्दृष्टि है। यहाँ भी यही कहना है कि त्रिकाली ध्रुवस्वभाव सामान्य है और उदयादि चार भाव विशेष हैं। विशेष के अवलम्बन से लाभ नहीं होता; इसलिए विशेष को परद्रव्य कहकर सामान्य एकरूप स्वभाव के आश्रय से लाभ होता है - ऐसा कहा है। जो जीव व्यवहार में रुचि रखते हैं, उनसे कहा है कि उसके आश्रय से लाभ नहीं होता, शुद्ध के आश्रय से लाभ होता है।

पैसा, कुटुम्बादि परद्रव्य ही हैं, देव-गुरु-शास्त्र भी परद्रव्य हैं और अपनी एक समय की पर्याय को भी परद्रव्य कहा है, क्योंकि उसका आश्रय लेने से मिथ्यात्व उत्पन्न होता है। एक चैतन्यस्वभाव अन्तःतत्त्व ही स्वद्रव्य है। किसी की भक्ति या कृपा से धर्म हो अथवा राग और पुण्य के आश्रय से धर्म हो - ऐसा तो है ही नहीं; किन्तु यहाँ तो यह कहते हैं कि तेरी पर्याय की कृपा से या उसके आश्रय से भी धर्म नहीं होता। पर्यायवान द्रव्यस्वभाव की कृपा से ही धर्म होता है।

गाथा ३९ की टीका में कहा है कि ''जीवादि सात तत्त्वों का समूह परद्रव्य होने से वास्तव में उपादेय नहीं है।'' ''मैं शुद्ध जीव हूँ'' - ऐसा विकल्प भी परद्रव्य है। गाथा १०३ की टीका में ''नौ पदार्थरूप परद्रव्य के....'' कहकर नौ पदार्थ को परद्रव्य कहा है। एक शुद्ध अन्तःतत्त्वरूप स्वद्रव्य उपादेय है। सर्व ही विभावभाव-औदयिकादि भावों से रहित शुद्धकारणपरमात्मा उपादेय है। यहाँ अन्तःतत्त्व का अर्थ अन्तरात्मा मत समझना। बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा - तीनों तो पर्यायें हैं, उनकी बात नहीं है, इन तीनों के बिना मात्र शुद्धस्वभाव, उत्पाद-व्यय रहित कारणपरमात्मा उपादेय है; क्योंकि उसी के आश्रय से लाभ होता है, इसलिए उसे ही स्वद्रव्य कहा है। व्यवहाररत्नत्रय, पाँच महाव्रत के विकल्प अथवा उपशमादि चार भावों के आश्रय से लाभ नहीं है, उससे राग होता है - धर्म नहीं होता, इसलिए परद्रव्य कहा है।

यहाँ कोई प्रश्न करे कि क्षायिकादिभाव को परद्रव्य क्यों कहा?

समाधान :- भाई, सुनो ! उन भावों का विचार करने पर राग उत्पन्न होता है, अतः पर्यायबुद्धि छुड़ाने के प्रयोजन से उसे व्यवहार कहकर, गौण करके, अभूतार्थ कहा, परद्रव्य कहा, हेय कहा और भूतार्थ शुद्धद्रव्य को स्वद्रव्य कहकर उपादेय

कहा, क्योंकि उसके आश्रय से धर्म होता है।

सहजज्ञान, दर्शन, चारित्र सुखरूप अन्तःतत्त्व का आधार शुद्धकारणपरमात्मा है।

अब, वह अन्तःतत्त्व कैसा है? ''वास्तव में सहजज्ञान, सहजदर्शन, सहजचारित्र, सहजपरमवीतरागसुखात्मक शुद्धअन्तःतत्त्वस्वरूप इस स्वद्रव्य का आधार सहजपरमपारिणामिकभाव लक्षण कारणसमयसार है।''

त्रिकाली सहजज्ञान, सहजदर्शन, सहजचारित्र, सहजपरमवीतरागी सुखरूप अन्तःतत्त्व है। शुद्धभाव, शुद्धस्वभावभाव है और उसका आधार परमपारिणामिकभाववाला कारण समयसार है। सहजज्ञान-दर्शन कहकर भिन्न-भिन्न गुणों के भेद समझाए थे। उनका आधार कारणपरमात्मा कहकर अभेद कह दिया। स्वद्रव्य में ज्ञानदर्शनादि चार भेद से समझाया है और उनको अभेद करके कारणसमयसार कहा। यही सम्यग्दर्शन के लिए उपाय है - यही धर्म का कारण है।

वास्तव में शुद्धअन्तःतत्त्वस्वरूप कारणपरमात्मा उपादेय है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय अथवा मोक्ष की पर्याय भी आदरणीय नहीं, कारण कि वह कार्यरूप है; कार्य में से कार्य प्रकट होता नहीं, अथवा पर्याय में से पर्याय आती नहीं; इसलिए स्वभाव शुद्ध त्रिकाल एकरूप है - वह कारण है, उसमें से कार्य आया है। कार्य उपादेय नहीं, किन्तु कारणपरमात्मा उपादेय है। पर्याय के ऊपर का लक्ष छुड़ाने के प्रयोजन से उस पर्याय को परद्रव्य कहकर, एकरूप शुद्धस्वभाव को स्वद्रव्य मानकर आदरणीय कहा है। **(क्रमशः)**

आगामी कार्यक्रम...

भिण्ड (म.प्र.) में एक आध्यात्मिक संगोष्ठी दिनांक 24 से 28 मार्च 2014 तक आयोजित होने जा रही है। इसमें ब्र. रवीन्द्रकुमारजी 'आत्मन्' अमायन का सानिध्य प्राप्त होगा, इसके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। अधिक जानकारी हेतु **संपर्क करें** - महेन्द्रकुमार शास्त्री (मंत्री, 9806793003), कौशलकिशोर जैन (उपमंत्री-09826235176) एवं वीरसेन जैन सर्राफ (अध्यक्ष -9926558138) आयोजक - श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट। **आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : राजा-महाराजा सरीखे के एक ही रानी और धर्मी सम्यग्दृष्टि के 96 हजार रानियाँ ? फिर भी उसको बंधन नहीं ?

उत्तर : भाई ! बाहर के पदार्थ बहुत हों तो बहुत बंध के कारण और अल्प हों तो अल्प बंध के कारण - ऐसा है नहीं। किसी का अधिक परमाणुओं से निर्मित स्थूल शरीर हो तो बन्धन विशेष और कृश शरीर हो तो बन्धन अल्प हो - ऐसा नहीं है। परद्रव्यों की अधिकता और अल्पता होना कहीं बन्ध और अबन्ध का कारण नहीं है। बन्ध का कारण तो परद्रव्य में एकत्वबुद्धि-स्वामित्वबुद्धि का होना ही है, संयोगों की अल्प-बहुत्वता बन्ध का कारण नहीं है। सम्यग्दृष्टि के 96 हजार रानियाँ, नवनिधान, 14 रत्न आदि वैभव होने पर भी वह चक्रवर्ती राजा धर्मी होने के कारण उन सबको अपना नहीं मानता; अत: वे परद्रव्य उसको बन्ध का कारण नहीं होते। इसके विपरीत एक रानी वाला राजा हो अथवा रानियों का त्यागी द्रव्यलिंगी मुनि हो; तथापि परद्रव्यों में स्वामित्व स्थापित करने वाला सदैव मिथ्यात्वरूप महापाप का बन्धक होता ही है। अन्दर में राग में एकत्वबुद्धि पड़ी, वही बन्ध का कारण है। संयोगों का अल्पाधिक आगमन तो उनके अपने कारण से है। आत्मा उनका कर्त्ता नहीं है। पूर्व पुण्य के कारण अनुकूल बहुल संयोगों की प्राप्ति होना बन्ध का कारण नहीं है। परद्रव्यों का संयोग विशेष होने पर भी उनसे बन्ध होता नहीं है - ऐसा कहकर परद्रव्यों से बन्ध होने की शंका छुड़ाई है। कहीं स्वच्छन्दी होने के लिए ऐसा कथन नहीं किया गया है - यह विशेष ध्यान रखने की बात है। स्वच्छन्दता का पोषण तो जिनागम में कहीं है ही नहीं। यहाँ तो दृष्टि के विषय की विशेषता बतलाई है। अधिक संयोग हो तो हानि और संयोग छूट जायें तो धर्मलाभ हो जाय - ऐसा है ही नहीं।

समाचार दर्शन -

11वाँ वार्षिक महोत्सव सानन्द संपन्न

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ मंगलायतन की स्थापना का 11वाँ वार्षिक महोत्सव 31 जनवरी से 6 फरवरी तक सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचन्दजी सोनागिर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, डॉ. जयन्तीलालजी जैन मंगलायतन विश्वविद्यालय, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन मंगलायतन, पण्डित संजयजी जैन मंगलायतन, ब्र. अमितजी जैन विदिशा आदि विद्वानों एवं विदुषी ब्र. कल्पना बेन सागर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही मंगलार्थी छात्रों द्वारा भी प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में नवलब्धि मण्डल विधान का आयोजन श्रीमती सुधा जैन की पुण्यस्मृति में श्री राजकुमार जैन परिवार सहारनपुर द्वारा किया गया। विशिष्ट सहयोगी के रूप में श्रीमती चेतना राजेन्द्रबाबू जैन कानपुर व श्री जैनबहादुर जैन कानपुर का विशेष सहयोग रहा। आमंत्रणकर्त्ता के रूप में श्री सीमन्धर जिनालय फालका बाजार ग्वालियर का सहयोग रहा।

इस प्रसंग पर पं. कैलाशचंदजी जैन द्वारा लिखित जैन तत्त्वदर्शन भाग-1 तथा आचार्य शिवकोटि द्वारा रचित भगवती आराधना का विमोचन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अशोकजी लुहाडिया, पण्डित सुधीरजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री ने किया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी जैन मंगलायतन एवं मंगलार्थी छात्रों द्वारा संपन्न हुये।

श्री परमागम मंदिर एवं स्वाध्याय मंदिर का -

भव्य शिलान्यास समारोह संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ कहान नगर में श्री महावीर दिगम्बर जैन परमागम मंदिर एवं श्री कुन्दकुन्द-कहान स्वाध्याय मंदिर का भव्य शिलान्यास समारोह दिनांक 23 जनवरी 2014 को सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर 3 दिन पहले से ही पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, ब्र. अमितजी आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में ब्र. अभिनन्दनजी द्वारा जिनमंदिर की महिमा एवं उसकी उपयोगिता बतलाते हुए पण्डित ज्ञानचंदजी प्रमोदकुमारजी परीष जैन एवं संपूर्ण ज्ञानानंद निवास परिवार को साधुवाद दिया तथा ताम्रपत्र पर अंकित प्रशस्ति पढकर शिलान्यास विधि प्रारम्भ की।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा संपन्न हुये।

आध्यात्मिक विद्वत्गोष्ठी संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 11 फरवरी तक आध्यात्मिक विद्वत्गोष्ठी सानन्द संपन्न हुई।

इस अवसर पर पण्डित उत्तमचंदजी छिन्दवाड़ा, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित ज्ञानचंदजी जैन विदिशा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री भरतभाई सेठ राजकोट, श्री चेतनभाई मेहता राजकोट, श्री ऋषभजी जैन इन्दौर, पण्डित हितेशभाई चौवटिया मुम्बई, विदुषी उज्ज्वला दिनेश शहा मुम्बई आदि विद्वान उपस्थित थे।

प्रात: जिनेन्द्र पूजन के उपरान्त गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों का लाभ मिला। तत्पश्चात् गुरुदेवश्री के प्रवचन में समागत मुख्य बिन्दुओं की चर्चा चार विद्वानों द्वारा हुई। दोपहर के सत्र में आध्यात्मिक पाठ के उपरान्त **क्रमबद्धपर्याय के विभिन्न बिन्दुओं** पर चार विद्वानों द्वारा चर्चा की गई। समयानुसार शंका-समाधान भी किया गया। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त **'दृष्टि का विषय'** पर विभिन्न विद्वानों द्वारा चर्चा की गई।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन विद्यार्थी गृह, सोनगढ के बालकों एवं आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन, दिल्ली की छात्राओं द्वारा किया गया।

विशिष्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत मुमुक्षु संस्थाओं द्वारा संचालित 11 विद्यालयों से आये संचालकों द्वारा अन्तर्महाविद्यालय संचालक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसके साथ ही युवा प्रवचनकार सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें देश के विभिन्न शास्त्री विद्वानों ने तत्त्वप्रचार में आधुनिक साधनों का उपयोग के साथ अन्य सुझाव व्यक्त किये।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में इस वर्ष को पूज्य गुरुदेवश्री के छहढाला पर प्रवचनों के आधार पर छहढाला वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की गई। इस अवसर पर संगोष्ठी के मुख्य प्रेरणास्रोत श्री अनंतराय ए.सेठ मुम्बई ने इस गोष्ठी को विद्वानों और उनके विचारों के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण आधार बताया और ऐसी गोष्ठियों के निरन्तर आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। गोष्ठी में श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री महीपालजी शाह बांसवाड़ा, श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

गोष्ठी का संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर ने किया। समस्त कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुये।

डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित

उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती सीमा जैन धर्मपत्नी श्री जिनेन्द्र शास्त्री को **'डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के साहित्य का समालोचनात्मक अनुशीलन'** विषय पर शोध करने पर राजस्थान के राज्यपाल डॉ. मार्गेट अल्वा एवं मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के कुलपति आई.वी. त्रिवेदी द्वारा मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर डाक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

श्रीमती सीमा जैन ने अपना शोध कार्य मीरा गर्ल्स कॉलेज की प्रोफेसर मन्जु चतुर्वेदी के निर्देशन में पूर्ण किया।

श्री शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित -

जैन बालिका संस्कार संस्थान

उदयपुर (राज.) : यहाँ संचालित जैन बालिका संस्कार संस्थान के द्वितीय सत्र की प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। आप 15 मार्च तक आवेदन पत्र कार्यालय में जमा करा सकते हैं।

विशेषतायें - तत्त्वज्ञान के साथ श्रेष्ठ लौकिक शिक्षण संस्थान में अध्ययन करने का अवसर, देश की श्रेष्ठ बालिकाओं के साथ अध्ययन, धार्मिक/पारिवारिक, सामाजिक वातावरण में रहने का अवसर, सांस्कृतिक/साहित्यिक/खेलकूद आदि गतिविधियों द्वारा बालिका को अपनी प्रतिभा निखारने के भरपूर अवसर, संस्थान में धार्मिक शिक्षण के अतिरिक्त यथासंभव लौकिक विषयों के शिक्षण की व्यवस्था।

प्रवेश प्रक्रिया - कक्षा 9वीं में प्रवेश हेतु कक्षा 8वीं में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करनेवाली बालिका ही प्रवेश पात्रता शिविर के योग्य होगी। आवेदन पत्र के साथ कक्षा 7वीं की अंकसूची लगावें। दिनांक 7 से 9 अप्रैल तक उदयपुर में आयोजित प्रवेश पात्रता शिविर में भाग लेना अनिवार्य है। **संपर्क सूत्र -** डॉ. ममता जैन (निर्देशिका), जैन बालिका संस्कार संस्थान, विजया बैंक के ऊपर, 648, हिरणमगरी सेक्टर-13, उदयपुर (राज.) मोबा. 09928149886

हार्दिक बधाई

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **डॉ. अशोककुमारजी शास्त्री दिल्ली** को जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान हेतु अहिंसा इन्टरनेशनल द्वारा दिनांक 12 जनवरी 2014 को अहिंसा इन्टरनेशनल जिनेन्द्र वर्णी जैनधर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

शहपुरा (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा नवनिर्मित जिनमंदिर में दिनांक 29 से 31 जनवरी तक दिगम्बर जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, श्री गांगजीभाई मोता भुज, पण्डित मनोजजी जबलपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव के प्रथम दिन मंगल कलश शोभायात्रा एवं नवरचित रत्नत्रय विधान संपन्न हुआ। द्वितीय दिन यागमंडल विधान के पश्चात् वेदी-कलश-शिखर आदि शुद्धि हेतु घटयात्रा निकाली गई। रात्रि में इन्द्रसभा का भव्य आयोजन हुआ। अन्तिम दिन जिनबिम्बों की भव्य शोभायात्रा निकाली गई एवं विधिपूर्वक वेदी पर स्थापना की गई। कार्यक्रम में लगभग 150 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित श्रेणिकजी जैन जबलपुर एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये। सभी कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री के निर्देशन में पूर्ण हुये।

श्री तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान एवं वार्षिकोत्सव संपन्न

नागपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर का 22वाँ वार्षिकोत्सव व तत्त्वार्थसूत्र वर्ष का समापन संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिनांक 9 से 15 जनवरी 2014 तक समारोह में तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान का आयोजन श्रीमती मालतीदेवी विजयकुमारजी मोदी परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं समयसार के आधार से नैतिक सदाचार एवं लोक-व्यवहार की शिक्षा के साथ ही आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान की गंगा बहायी गई। साथ ही जिज्ञासु युवाओं के लिये विशेष चर्चासत्र का भी आयोजन किया गया। डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा विधान के बीच-बीच में सूत्रों के शुद्ध उच्चारण के साथ ही सामान्य अर्थ एवं मन्त्रों का वाचन किया।

विधि-विधान के कार्य ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर द्वारा कराये गये।

करणानुयोग पर विशेष कक्षा

राजकोट (गुज.) : यहाँ दिनांक 11 से 20 जनवरी 2014 तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा दोनों समय गुणस्थान विषय पर कक्षायें ली गईं। राजकोट में प्रथम बार आयोजित करणानुयोग की कक्षाओं में लगभग 100-150 साधर्मियों ने लाभ लिया।

भगवान आदिनाथ निर्वाणोत्सव एवं कुन्दकुन्दाचार्य जयन्ती संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 29 जनवरी को आदिनाथ भगवान का निर्वाण महोत्सव मनाया गया, जिसके अन्तर्गत टोडरमल महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों एवं अनेक श्रद्धालुओं द्वारा कैलाश पर्वत पर विराजमान आदिनाथ भगवान की पूजा व निर्वाण फल चढाया गया। प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने प्रवचनसार की गाथा 80 के आधार से अरहंत बनने की विधि पर प्रकाश डाला एवं रात्रि में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने दर्शनपाहुड के आधार पर मुक्तिमार्ग की चर्चा की।

दिनांक 4 फरवरी (बसंत पंचमी) को आचार्य कुन्दकुन्द की जन्म जयन्ती मनाई गई। प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के उद्बोधन के पश्चात् आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित पंचपरमागम की जिनवाणी शोभायात्रा स्मारक परिसर में बहुत धूमधाम से निकाली गई। पंचपरमागम को पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान करने के उपरांत कुन्दकुन्द आचार्य की विशेष पूजन की गई।

सभी कार्यक्रम पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुये।

षष्टम वार्षिक सम्मेलन संपन्न

नागपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित श्री महावीर विद्या निकेतन ने अपनी स्थापनाका षष्टम वार्षिक सम्मेलन दिनांक 11 एवं 12 जनवरी 2014 को आयोजित किया।

इस अवसर पर एक संस्कार प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा जैनधर्म का सांस्कृतिक इतिहास, ग्रीन सिम्बल के नाम पर भ्रान्ति का निवारण, पापाचार एवं सप्त व्यसन से होने वाली हानियों का दिग्दर्शन, भक्ष्याभक्ष्य विचार व ई कोडिंग की सही जानकारी, नरक दर्शन एवं तीन लोक की सजीव झांकी आदि का मॉडल व पोस्टरों के माध्यम से प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम में आचार्य पद्मनंदी द्वारा रचित पद्मनंदी पंचविंशतिका ग्रन्थ का विमोचन ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना व ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर के मंगल सानिध्य में हुआ।

इस अवसर पर विद्या निकेतन के आदर्श विद्यार्थी का चयन कर पुरस्कृत किया गया। साथ ही अन्य छात्रों को श्रेष्ठ कार्यों हेतु नकद पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त चतुर्थ सत्र के कक्षा 10वीं के छात्रों व प्रथम सत्र के कक्षा 12वीं के छात्रों का 'दीक्षान्त समारोह' ब्र. केशरीचंदजी 'धवल' छिन्दवाडा व ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सानिध्य में संपन्न हुआ।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

नई दिल्ली : दिनांक 17 जनवरी 2014 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने प्राकृत भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु वर्ष 2013 का 'महर्षि वादनारायण व्यास'- युवा राष्ट्रपति सम्मान डॉ. अनेकान्तकुमारजी जैन को प्रदान किया।

श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. अनेकान्तकुमारजी जैन वर्तमान में श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के जैनदर्शन विभाग में सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत हैं।

सन् 2011 में आपने ताइवान, चीन में विदेश मन्त्रालय द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में भारत की ओर से जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करके जैन सिद्धांतों की व्यापकता पर प्रकाश डाला। आपने अभी तक लगभग 50 राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय सेमीनारों में सम्मिलित होकर प्राकृत और जैनविद्या के अनेक अनुसंधान प्रस्तुत किये हैं। आप पिछले 18 वर्षों से दशलक्षण आदि पर्वों में जैन तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। जैन समाज द्वारा आपको अनेक अभिनन्दन पत्र एवं 'जैनविद्या भास्कर''युवा वाचस्पति' आदि उपाधियाँ दी जा चुकी हैं। उत्कृष्ट शोधकार्य हेतु आपको 'अर्हत वचन पुरस्कार' तथा 'कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार' भी दिये जा चुके हैं।

81 वर्ष की उम्र में पीएच.डी.

सूरत (गुज.) निवासी श्री धनकुमारजी जैन (गोधा) को 81 वर्ष की उम्र में **'टोडरमल कृत अर्थसंदृष्टि अधिकार में निहित कर्म प्रकृति मोह का गणितीय विश्लेषण'** विषय पर शोधकार्य हेतु 'द ओपन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी फॉर कॉम्प्लीमेन्ट्री मेडिसिन्स' मुम्बई द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना यह शोध कार्य डॉ. अनुपम जैन इन्दौर एवं डॉ. मनमथ पाटनी के निर्देशन में पूर्ण किया। प्रस्तुत शोध का आधार पण्डित टोडरमलजी की सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका का अर्थसंदृष्टि अधिकार है। श्री धनकुमारजी जैन स्वयं एक गणित के अच्छे विशेषज्ञ विद्वान हैं और आपने प्रस्तुत शोध आलेख में गणित की अनसुलझी जटिल गुत्थियों को आधुनिक गणित में रूपान्तरित करके विषय को अत्यन्त स्पष्ट किया है। आपकी इस उपलब्धि हेतु हार्दिक बधाई !

इस उपलक्ष्य में आपकी ओर से टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 3000/- एवं जैनपथप्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को 2,222/- प्राप्त हुये।

शोक समाचार

कोटा (राज.) निवासी श्रीमती प्रेमलता जैन धर्मपत्नी स्व. श्री अरिदमनलालजी जैन दिल्ली वाले का 92 वर्ष की आयु में दिनांक 27 जनवरी 2014 को अत्यंत शांतपरिणामों पूर्वक देहविलय हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं, आपने पाँच दशक तक बाबू युगलजी के प्रवचनों का भरपूर लाभ लिया और तत्त्वज्ञान को आत्मसात करने का निरंतर प्रयास किया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

बालचंदजी पाटनी नहीं रहे

कलकत्ता निवासी श्री बालचंदजी पाटनी का दिनांक 16 फरवरी 2014 को अत्यंत शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं कलकत्ता मुमुक्षु मण्डल के आधार स्तम्भ थे। सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखरजी में बने संकुल में आपका योगदान सदैव स्मरणीय है।

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में आप सदैव अनन्य सहयोगी रहे। जब-जब ट्रस्ट पर कोई संकट आया आप मजबूत दीवार बनकर खड़े रहे। आपके निधन से न केवल टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने अपितु सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज ने अपना एक मजबूत स्तंभ खो दिया है।

आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने श्री बालचंदजी पाटनी का परिचय दिया तथा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल व ब्र. यशपालजी जैन ने भी अपने संस्मरण सुनाये। सभा में पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, श्री ताराचंदजी सौगानी के अतिरिक्त टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 5100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है। **- सह सम्पादक**

विचार गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ बापूनगर स्थित पार्श्वनाथ चैत्यालय में दिनांक 4 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द के जन्म दिवस बसंत पंचमी के दिन दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ जयपुर के तत्त्वावधान में **'आचार्य कुन्दकुन्द का वैशिष्ट्य'** विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध विद्वान डॉ. सनतकुमारजी जैन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन एवं साहित्य से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने की।

कार्यक्रम का संचालन श्री योगेशकुमारजी टोडरका ने किया।

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 648 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 76 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 30 जून 2014 से प्रारंभ होगा।

स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **दिल्ली में 18 मई से 4 जून, 2014 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा। - **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** प्राचार्य, श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) **फोन :**(0141) 2705581, 2707458, फैक्स-2704127